द्वितीय अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के पात्र एवं चरित्र चित्रण का अनुशीलन -

द्वितीय अध्याय

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के पात्र एवं चरित्र चित्रण का अनुशीलन

प्रस्तावना -

आधुनिक कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा का नाम चर्चित हो रहा है। उन्होंने अपनी कहानियों में जीवन की जिस पीडा को, दर्द को, संत्रास को देखा, समझा और भोगा उसे ही अपनी कहानियों में उतारा है। उनकी कहानियाँ वास्तविकता की घरातल पर लिखी दिखायी देती है। इनकी कहानी संग्रहों के संदर्भ में रमेश तैलंग लिखते हैं कि, ''मैत्रेयी पुष्पा के इस कहानी संग्रह को पढना आधी दुनिया के अँधेरे-उजालों के बीच से होकर गुजरना है।''[1] कहानी के माध्यम से लेखिका ने संसार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। चरित्र चित्रण की व्याख्या करते हुए रॉबिन्सन ने कहा है कि, ''संक्षेप में चरित्र चित्रण शब्द का अभिप्राय कहानी में लोगों (पात्रों) को पर्याप्त मूर्तिमत्ता और स्वाभाविकता के साथ इस प्रकार चित्रित करना कि वे पाठकों के सामने छाया मात्र न रहकर पुस्तक के समतल पन्नों पर उभर आएँ और कम से कम उस समय के लिए तो व्यक्तित्व धारण कर ले''[2] अत: रॉबिन्सन ने अत्यंत अच्छे ढंग से चरित्र चित्रण पर अभिप्राय प्रस्तुत किया है।

मैत्रेयी पुष्पा आलोच्च कहानी संग्रहों की कहानियों के चरित्र - चित्रण का अनुशीलन पर विचार करने से पहले चरित्र - चित्रण क्या है ? और उसका कहानी में कितना महत्वपूर्ण योगदान है ? यह देखना अनिवार्य लगता है। आज कहानी में चरित्र चित्रण का महत्व बढ गया है। इस कारण उसका स्वरूप समझ लेना अत्यंत आवश्यक है।

2.1 चरित्र चित्रण का स्वरूप

कहानी में कथावस्तु के उपरान्त चरित्र-चित्रण को ही स्थान दिया जाता है। चरित्र-चित्रण में पात्रों के माध्यम से मानवता का बहुपक्षीय रूप प्रस्तुत किया जाता है। मनुष्य के

चारित्रिक विकास की प्रक्रिया का भी परिचय दिया जात है। डॉ. गुलाबराय ने कहानी में चरित्र-चित्रण तत्व के महत्व को विशद करते हुए बताया है कि, ''आजकल कथानक को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना कि चरित्र चित्रण और भावाभिव्यक्ति को। चरित्र-चित्रण का संबंध पात्रों से है। कहानी में पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होती है। कहानी में पात्रों के चरित्र का पूर्ण विकासक्रम नहीं दिखाया जाता, वरन् प्राय: बने बनाने चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डाला जाता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे।''[3] गुलाबराय जी ने चरित्र-चित्रण के महत्व को बहुत ही अच्छी ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव ने कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि, कहानी में ''घटनाओं'' के निर्णायक चरित्र ही हो सकते है और ''घटनाओं'' का निर्माण कहानी में ''चरित्रों'' के निदर्शन के लिए ही किया जाता है, अत: माना जा सकता है कि घटना-प्रधान, या चरित्र प्रधान कहानियों के आधार पर कहानी का जो वर्गीकृत विभाजन अब तक किया जाता रहा है, अनुचित है। पर उपर्युक्त विभाजन की संगति का एक आधार यह है कि प्राचीन कहानियों के रचनाकारों ने ही इस विभाजन को मानकर अपनी कहानियों का निर्माण किया है। उपर्युक्त विभाजन का अनौचित्य आधुनिक कहानियों के प्रकाश में आने के बाद से ही अनुभव किया गया है क्योंकि आधुनिक कहानियाँ चरित्रों को परिस्थितियों के अधिक गहरे परिपार्श्व में चित्रित करती हैं।''[4] अत: परमानन्द ने अत्यंत सुंदर ढंग से चरित्र चित्रण के स्वरूप को स्पष्ट किया है।

2.2 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्व

आधुनिक काल में कहानी साहित्य में चरित्र-चित्रण का क्या महत्व है, इस संदर्भ में डॉ.प्रतापनारायण टंडन जी ने अपने महत्वपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा है - ''चरित्र-चित्रण कहानी का एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस तत्व के अंतर्गत कहानी के पात्रों की भावात्मक, बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं की अभिव्यंजना होती है। सैद्धांतिक

रूप में जहाँ पर यह तत्व एक कहानी की कलात्मक उत्कृष्टता का द्योतक होता है, वहाँ व्यावहारिक दृष्टि से यह कहानी के उद्देश्य और उदात्ती कृत आदर्श का प्रस्तुतीकरण भी करता है। कहानी में पात्र योजना के संदर्भ में एक बात यह सबसे अधिक ध्यान में रखने योग्य है कि उसमें यथासंभव किसी एक पात्र के ही जीवन की किसी घटना विशेष की कलात्मक अभिव्यंजना होनी चाहिए।''[5] टंडन जी ने अत्यंत सुंदर ढंग से कहानी के तत्वों के अंतर्गत चरित्र-चित्रण के महत्व को बता दिया है। अत: स्पष्ट है कि चरित्र-चित्रण को महत्वपूर्ण कहानी का तत्व माना जाता है। डॉ.(श्रीमती) सुमन मेहरोत्रा जी ने कहानी में चरित्र-चित्रण के महत्व को बताते हुए कहाँ है कि, ''पात्र कहानी की सजीवता के संचालक होते हैं, क्यों कि पात्रों की अवतारणा में कहानीकार की अनुभूति की सृष्टि की यथार्थता होती है जो पात्रों के अदृश्य रूप को भी दृष्टव्य बना देती है। पात्रों का विश्लेषण सिध्द करता है कि उनके भाव, संघर्ष और मानवीय स्वभावगत प्रश्नों की श्रृंखला ही कहानी को सप्रणता प्रदान करती है और इन सबसे ही पात्र का चरित्र बनता है।''[6] अत: सुमन मेहरोत्रा ने चरित्र-चित्रण के महत्व को अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया है।

2.3 मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्य कहानी संग्रहों की कहानियों में चरित्र-चित्रण

मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्य कहानी संग्रहों की कहानियों में पाये जानेवाले पात्रों के चरित्र-चित्रण का अनुशीलन करते समय हमे उनके आलोच्च कहानी संग्रहो के कुल पैतालीस पात्रो के चरित्र पर प्रकाश डालना अनिवार्य है। इन कहानी संग्रहो में कुल पच्चास-तीस गौण पात्र है। इन सभी पात्रों का अलग-अलग दृष्टि से अध्ययन किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा का लक्ष्य नारी होने के कारण हम प्रारंभ में नारी पात्रों का अनुशीलन करेंगे -

2.3.1 मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्च कहानी संग्रहों की कहानियों में नारी पात्र

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी को केंद्र मे रखकर उसका चित्रण किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में न्याय का साथ देनेवाली आधुनिक नारी का रूप दिखाने का प्रयास किया है। ' फैसला'

कहानी की **'बसुमती'** को केंद्र में रखकर मैत्रेयी पुष्पा ने परिश्रमी, निड़र, सज्जन, स्वाभिमानी, विवेकी नारी को उजागर किया है। बसुमतीने गाँव की प्रधान बनने पर गरीब लोगों को न्याय देना अपना दाईत्व समझा। दिया हुआ रातो-रात बसुमती का फैसला बदलने के उपरांत ईसुरिया ने आत्महत्या की उस समय उसने दरोगाजी से झगडा किया और गाँव के सामने न्याय माँगने के लिए वह झगड़ती रही। बसुमती न्यायप्रिय औरत है जो न्याय के सत्यपक्ष के बीच रोड़ा अटकानेवाले अपने पति को भी अपना वोट नहीं देती है। बसुमती नारी चेतना का अच्छा उदाहरण लगती है। वह नारी संस्कृति की चौखट को तोड़कर बाहर आती है परंतु वह कठोर विद्रोह नहीं करती कारण पुरूष प्रधान संस्कृति का डर उसके व्यक्तित्व पर छाया हुआ है।

'बहेलिये' कहानी में **'गिरजा'** अत्याचार का विरोध करनेवाली, अन्याय के प्रति आवाज उठानेवाली, साहसी नारी है। गाँव के कुटील राजनीतिज्ञोंने लोगों ने मास्टर जी को जहर देकर मारा और उनकी मौत का जिम्मेदार पत्नी सावित्री को ठहराया। इस अत्याचार को देखकर गिरजा ने न आव देखा न ताव। भागकर दरोगा का कॉलर पकड लिया और उसे कहा, ''नहीं छोडूगी दरोगाजी न्याय करिये। यह क्या किया आपने ?मेरा बेटा भी दरोगा है। मगर ऐसा नहीं..... ऐसा कहाँ। सूरज, तुम जानते हो उसे ?''' इस प्रकार गिरजा अत्याचार के प्रति आवाज उठाती है। साथही भोली के मृत शरीर को देखकर वह अपने आपको वहाँ पर पाती है, इतनी वह भावुक है। एक स्वाभिमानी, सुसंस्कृत, अत्याचार-अन्याय का विरोध करनेवाली साहसी गिरजा है। अत: वह संघर्षशील नारी के रूप में सामने आती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने समाज की एक और नारी की अलग पहचान को केंद्र में रखकर उसका चित्रण किया है।

'केतकी' कहानी की प्रमुख पात्र **'केतकी'** एक सुंदर, ममतामयी, परिश्रमी और साहसी नारी है केतकी गन्धर्वसिंह की वासना का शिकार बनने के उपरांत भरी पंचायत में

उसका नाम लेकर कहती है, ''मुझे तो आपका हाथ पकडना चाहिए।'' उसने गन्धर्वसिंह को ऊँचे आसन से बलपूर्वक नीचे खींच लिया। वे इस अप्रत्याशित आघात से गिरते-गिरते बचे।

श्रीगोपाल उठकर खड़े हो गए। आवेश में कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे।

''आपका अंश मेरे गर्भ में है।''वह बोली तो प्रधान का चेहरा रक्तविहीन,विवर्ण हो उठा। वे काँप उठे। फिर भी किसी तरह साहस बटोरा - ''यह क्या..... क्या कह रही हो, क्या कर रही हो बहू।''

''बहू-बहू मत कहिए। बहू-बहू यह रिश्ता आपके मुख से उच्चारना शोभा नहीं देता। अब बस यह सून लीजिए कि जो मैं कह रही हूँ वह झूठ नहीं है।''[8] अत: प्रस्तुत कहानी में केतकी ने पंचायत के सारे नियमों को झूठा साबीत कर दिया और अपने पर हुए अन्याय-अत्याचार का विरोध किया।

अपने स्वार्थ के लिए व्यक्ति कैन से भी हद तक गिर सकता है चाहे वह स्त्री हो या पुरूष। मैत्रेयी पुष्पा नेस्त्री के एक अनोखे रूप का चित्रण किया है। **'सेंध'** कहानी में **'बैहरी'** एक राजनीतिक मायाजाल में फँसी नारी के रूप में सामने आती है। वह कहती है कि, ''विधायक जी का कहना है कि, ऐसे नाजुक मौकों पर रेत गर्द में ही मिलकर रहो - वहीं, गाँव में। समय पडे तो बैलगाडी में चलो, पैदल यात्रा करो। प्रभाव इन्हीं बातों से बनता है, छवि निखरती है।''[9] इस प्रकार राजनैतिक मायाजाल में फंसी बौहरी भ्रष्टाचार करती है और अत्याचार को चुपचाप देखती है। इतनी वह स्वार्थी है कि, अच्छी जमीन पाने के लिए सी.ओ.जी. को पैसा देकर गंगासिंह की जमीन हड़प लेती है। अत: बौहरी एक स्वार्थी, भ्रष्टाचारी अन्याय को साथ देनेवाली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

नारी का मुख्य रूप सेवाभावी है। माँ हो या बेटी कौन से भी रूप में वह अत्यंत निष्ठापूर्वक सेवा करती दिखाई देती है। इस महत्वपूर्ण रूप को मैत्रेयी पुष्पा ने चित्रित किया

है। **'सिस्टर'** कहानी में ' **डोरोथी डिसूजा** ' निष्काम सेवाभावी सिस्टर के रूप में सामने आती है, जैसे - ''भाभी निश्चित हो गयीं। पति सेवा का सारा भार सिस्टर ने ले लिया है वे कृतकृत्य है। दवा-गोली, उठाना-बिठाना-टहलाना,स्पंज से लेकर डाईट का ध्यान रखना। वे देवदूत हो गयी इस घर के लिए।''

भाभी पडोस में तारीफ करते न अधाती, ''तन-मन से जुटीं हैं बहनजी। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर जान-पहचान के हैं। सच्ची, भगवान उनको सौ साल की उम्र दे।''[10] अत: प्रस्तुत कहानी में डिसूजा की सेवाभावीवृत्ति में अपनेपन की भावना झलकती है और वह एक परिश्रमी, स्वाभिमानी, सेवाभावी, अकेली नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने शोषण सिर्फ मनुष्य ही नहीं करते तो परिस्थितयाँ भी शोषण का पहिया तीव्र बनाती है। मनुष्य की मानसिकता को बताने का प्रयास लेखिका ने किया है। परिस्थितियों की शोषिता **'रिजक'** कहानी की **'लल्लन'** सामने आती है। लल्लन एक हँसमुख, सज्जन, परिश्रमी, साहसी, काम के प्रति आस्था के रूप में प्रस्तुत होती है। बिरादरी के लोक जब प्रसुती नर्स का काम करने को रोकते हैं उस समय मोदी की बहू की चीत्कार सुनकर अपने जातकर्म पर लैटी आयी लल्लन कहती है, ''ओ मतारी.....ई.....''

मोदी की बहू।

इस बार लल्लन के देह में बिजली-सी कौंधी। पाँवों में आँधी-तूफान भर गया। वह बदहवास-सी भाग छूटी। नंगे पाँव भागती गई। भागती गयी मोदी के द्वार तक।'' [11] इस प्रकार लल्लन की काम के प्रति आस्था दिखाई देती है। लल्लन अपनी बसोर जाति के यथार्थ और अपनी नियति दोनों को जानती है, जब पति को छुड़ाने कोई नहीं आता तो सारा रोष पतिपर लगाकर कहती है, ''बिंडा रह हवालात में। बडा मरता था बिरादरी के लिए। सगे खास अब कहाँ अलोप हो गए ? हत्यारे, सब अपने स्वारथ के हैं। गुड देखते के चींटे''[12]

इस प्रकार यहाँ लल्लन की पीड़ा दिखायी देती है। वह एक सज्जन, परिश्रमी, अत्याचार का विरोध करनेवाली दृष्टिगोचर होती है।

'अब फूल नहीं खिलते.....' कहानी की **'झरना'** एक सुंदर, कॉलेज में शिक्षा लेनेवाली युवती के रूप में सामने आती है। कॉलेज के लडके तंग करने पर उनको वह जवाब देती है और उनसे झगड़ा करती है। जब प्रिंसिपल उससे जबरदस्ती करने की कोशिश करते हैं तब उस अन्याय के प्रति आवाज उठाती है, जेसे - ''पी.टी.टीचर प्रार्थना सभा में खडे छात्रों को एबाउट टर्न कहने को ही थे, कि एक महीन नारी स्वर जोर से चीखा,'' ''प्रिंसिपल को बाहर करो..... राक्षस को निकाल दो..... छत्रों को न्याय.....।''[13] अत: परिणामों की ओर ध्यान न देकर अपने प्रति हुए अन्याय का विरोध करनेवाली झरना दृष्टिगोचर होती है। वह एक चेतित नारी है।

'बेटी' कहानी की **'मुन्नी'** सुंदर, सुसंस्कृत, भावुक, परिश्रमी आदि रूपों में अंकित है। बेटों से निराश माँ का पत्र मिलते ही मुन्नी अपने बेटी को माता-पिता के बुढापे का सहारा बनाती है और उसे इतना आत्मविश्वास है कि, अपनी बेटी वसुधा की तरह गाँव में रहेंगी और पढ़ाई पूरी करेगी। अपनी पढाई की अधूरी आकांक्षा वह अपने बेटी में देखती है। ऐसा मुन्नी का अनोखा चित्रण अंकित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी के 'प्यार' जैसे अनमोल रत्न पर मर-मिटने वाले रूप की ओर प्रकाश डाला है। 'मन नाँहि दस-बीस' कहानी में 'चन्दना' एक सुंदर, स्वभाव से शांत, संवेदनशील नारी है। स्वराज से बचपन की घनिष्ठ मैत्री का रूपांतर प्यार में होने के उपरान्त बीच मझदार में छोड़कर गए स्वराज को वह कहती है, ''तुम भी इस भीषण ज्वाला में कहाँ तक धधकते ? पर दु:ख इस बात का रह गया स्वराज, गांधी जी की लिखी किताबें पढ़कर भी तुम उस पथ पर नहीं चल सके, मैं ही अकेली चलती रह गयी। बीच राह से पलायन क्यों

14372

कर गए तुम?सम न सकी।''[14] अत: चन्दना एक समाज के जाति-पाति के साथ प्यार के लिए लडनेवाली निडर नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

'ललमनियाँ' कहानी में **'मौहरो'** एक अनपढ़, सुंदर, परिश्रमी नारी है। वह स्वभाव से शांत है। जोगेश नौकरी लगने पर वापस लाने का वादा देकर उसे वापस गाँव छोडकर दूसरी शादी के लिए उसी गाँव में दाखिल होता है। उस समय मौहरी उसकी शादी में ललमनियाँ का नाच दिखाती है और अपने प्यार को वह सिने में दफन करती है। उस समय उसका संयम श्रेष्ठ स्तर का दिखायी देता है। मौहरी एक समाज से उपेक्षित, विवश नारी के रूप में अंकित होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी द्वारा अपनी बेटी को पालने और पति प्यार को न भूली हुई पेट भरने के खातिर नाच करनेवाली विवश मौहरी का रूप दिखाया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने प्यार का और एक उदाहरण सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। माँ के प्यार के लिए तरसी **'तुम किसकी हो बिन्नी ?'** कहानी की **'बिन्नी'** एक छोटी, सुंदर और शांत लडकी है। छोटी होकर भी माँ का दुलार पाने के लिए घर का सारा काम करती है। माँ का प्यार पाने के लिए सदा प्रयत्नशील बनी बिन्नी संयमी जगती है। साथ ही वह होशियार दिखाई देती है। इस प्रकार बिन्नी सुंदर, परिश्रमी, शांत लडकी के रूप में दृष्टिगोचर होती है।

मैत्रेयी पुष्पा समाज के मानदण्डों का विरोध करती है ऐसा प्रतित होता है। **'पगला गयी है भागवती.....।'** कहानी में **'भागो'** एक विधवा नारी होकर भी अन्याय का विरोध करनेवाली नारी के रूप में प्रस्तुत होती है, ''ठाकुर को पत्थर मारकर कहती है कि, ''मास्टर आन..... बिरादरी हतोसो का ? भलौ मानस हतो। और जा बहू..... जा की तुम आरती उतार रहे..... जा कौन-सी असल ठाकुर की जाई है, जा तैं हिन्द तक नइया ! और चार महीना गरभ.....! आंधो फिर, आज दै दै बेटा कों जहर..... जैसे मेरी अनुसुइया

कों.....!!!.''[15] अत: ठाकुर को मारकर अनुसुइया को न्याय देनेवाली भागो विचारशील, साहसी, अभिमानी नारी के रूप में अंकित होती है।

लेखिका ने गाँव की नारियों के स्वाभिमान को अलग-अलग दृष्टि से अंकित किया है, वैसे ही शहरी नारी की ओर भी दृष्टिगोचर किया है।

'कृतज्ञ' कहानी की **'वसुधा'** स्वभाव से शांत, परिश्रमी, स्नेहशिल, भावुक, नारी है।चाचा (हरिशचंद) के बीमारी की वजह से वपह परेशान लगती है और उनके एहसानों तले अपने-आप को दबी महसूस करती है। पति के नाराजी के कारण चाचाजी के लिए चाहकर भी कुछ कर नहीं पाती इतनी वह विवश है। उसकी चाचा हरिश्चचंद्र के प्रति कृतज्ञता प्रशंसनीय है।

'अपना-अपना आकाश' कहानी में **'अम्मा '** गाँव की रहनेवाली बुढ़ी औरत है। गाँव से शहर आने के कारण उसे अकेलापन मेहसूस होता है। तीनों बेटों ने माँ का बँटवारा किया है, इस बात को वह बर्दाश्त कर लेती है। लेकिन जब उसे अनाथाश्रम भेजने की बात वह सुनती है तो वह चुपचाप वापस अपने गाँव चली जाती है। इससे उसका स्वाभिमान झलकता है। इस प्रकार माँ एक विवेकशील संयमी, स्वाभिमानी, अकेलेपण की शिकार, गाँव की रहनेवाली युवती के रूप में अंकित है। आज पाश्चात्य सभ्यता के अनुकरण के कारण बढे-बुढ़ों की परिवार में होनेवाली हालत का दर्दनाक चित्रण देखने को मिलता है।

माँ और बेटी के रिश्ते को संसार में एक अहम स्थान प्राप्त हुआ है। उस रिश्ते को मैत्रेयी पुष्पा ने रेखांकित किया है। **'चिन्हार'** कहानी में **'सरजू'** ममतामयी, निस्वार्थी, भयग्रस्त,विवश, मेहनती औरत है। उसने मातृत्व का बलिदान दिया हुआ दिखाई देता है, जैसा कि, ''वह बस ऐसे ही उनकी आज्ञा पर चकरधिन्नी हुई दिन बिता रही थी। विद्यादेवी और केदारनाथ की पुत्री कनक अब बडी होने लगी। सरजू उनकी कौन थी.....? कोई नहीं..... न कोई नाता रहा, न सम्बन्ध। सारे रिश्ते ने पथ्य में पटक दिए थे विद्यादेवी

ने..... महज उनकी अनुचरी सरजू जीवित रह गयी..... बस।''[10] अत: वह अपने सारे रिश्ते-नाते भूलकर अपनी बेटी के लिए चुप रहती रही और छुपकर मातृत्व देनेवाली प्रेमल, विवश माँ के रूप में योगदान निभाती है।

'चिन्हार' कहानी में सरजू की बेटी **'कनक'** एक जिद्दी, हँसमुख, प्रेमल, संवेदनशील लडकी है। सरजू कनक की असली माँ होते हुए भी कनक को बुआ और मामा माता-पिता के रूप में लगे है ताकि कनक के उसने इस राज को नहीं खोला है। कनक को कोई नही बताता कि उसकी मां विद्या नहीं बल्कि सरजू है। फिर भी कनक यह बात जानती है और शादी में बिदाई के वक्त सरजू को मिलने के लिए घर भागी चली आती है और अपनी माँ से कहती है - ''माँ.....ऽ.....ऽ.....आँऽ.....ऽ.....आँ....., दहली.....ऽ..... ई.....ऽ.ज पुजवाओं..... माँ, माँ.....ऽ.....ऽ..... आँ।'' वह कहती हुई सरजू से लिपट गयी। जितनी रो सकती थी रोयी कनक, माँ के कन्धें पर सिर रखकर।''[17] खून के रिश्तों को खून ही पहचानता होती है यहीं बात हमें यहाँ पर कनक के माध्यम से स्पष्ट होती है। भले सच्चे रिश्ते को कहीं पर भी दूर रखा तो भी खून की ओर खून का आकर्षण बढ़ता रहता है। सरजू कनक की भेट इस का उदाहरण है।

'तुम किसकी हो बिन्नी ?' कहानी में **'दादी'** गाँव की रहनेवाली ममतामयी, मेहनती, विचारशील, अन्याय के प्रति आवाज उठानेवाली नारी के रूप में सामने आती है। बिन्नी की माँ जब उसे स्वीकारती नहीं तब दादी के प्यार दुलार में वह पलती है। दादी बुढी होकर भी बिन्नी के खातिर सारा काम करती है। बिन्नी को उसकी माँ बेटी न मानने पर उसके भविष्य का विचार करके उसे अपने साथ गाँव लेकर जाती है औरउसे फिर वापस शहर नहीं भेजती। दादी का चित्रण इस रूप में उजागर होता है।

संक्षिप्त में यहाँ यह स्पष्ट होता है कि आलोच्य दो कहानी संग्रहो के नारी पात्र ग्रामांचलिक और नगरीय जीवन के मध्यवर्गीय पात्र हैं। ये नारी पात्र शोषित, पीडित,

प्रताड़ित होकर भी भारतीय नारी संस्कृति की चौखट में बैठकर कभी अन्याय अत्याचार का मुकाबला करती और इस संघर्ष में सफल भी होती है। मैत्रेयी पुष्पा यहाँ एक नारी कहानीकार होने के कारण नारी पात्रों की वह पक्षधरता वह अधिक करती है। नारी पात्रों को पुरूषी अहंम के खिलाफ आवाज उठाने को प्रेरित करती है। इन आलोच्य कहानी संग्रहो की नारियाँ शिक्षित और अशिक्षित भी है । शिक्षित नारियाँ अत्याचारों का मुकाबला करने में सक्षम लगती है, यहाँ अशिक्षित नारियाँ भी चेतित लगती है।

इन कहानी संग्रहों के प्रमुख पात्र मैत्रेयी पुष्पा के विचारों के नाहक लगत है।

2.3.2 मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में पुरूष पात्र

मैत्रेयी पुष्पा स्वयं नारी होकर भी उन्होंने अपनी कहानियों पुरूष पात्रों को भी दिखाकर अच्छे पुरूषों की प्रशंसा की है और बुरे, अन्यायी, अत्याचारी, कामुक, षड्यंत्री, भ्रष्टाचारी, नारीलंपट पुरूषों का निषेध किया है। आलोच्य कहानी संग्रहों में उन्होंने संख्या - पुरूष पात्रों का चित्रण करके उनकी स्थितियों पर प्रकाश डाला है।

'फै सला' कहानी का **'रनवीर'** स्वार्थी पुरूष है। रनवीर कुशल राजनीतिज्ञ और आत्मकेंद्रित षड्यंत्री पुरूष है। वह बसुमती कापति है, गाँव का प्रमुख होने के कारण एक साथ दो-दो पदों पर रह नहीं सकता। इसी कारण वह पत्नी को प्रधान बनाता है। पत्नी को पंचायत में जाने नहीं देता और खुद जाकर फैसला सुनाता है। उसे जो पैसा देता उसकी तरफ से वह न्याय देता, इतना वह लालची है, जैसे - ''अब कहाँ से आते रूपइया ? छान बेच दे क्या ? छान बिकती है क्या ? कौन करे न्याय ? इसुरिया रनवीर को गरीबों के खिलाफ न्याय देने के लिए अयोगय व्यक्ति मानती है ? वह बसुमती से कहती है - ''रनवीर तो गरीब को ही मारेंगे। तुम चली जाती तो बच जाता कुम्हार का।''[18] रनवीन राजनीत में चतुर है। रनवीर खुद कहते है, ''गाँव का आदमी इनता भोला नहीं, जितना समझा जाता है। फि र वह, जो राजनीति के चक्रव्यूह भेद चुका हो, वह पारंगत तो शहरी नेताओं को पटखनी

खिला दे।''[19] अत: रनवीर राजनीति में चतुर, स्वार्थी, भ्रष्टाचारी, आदि रूप में अंकित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने राजनीतिक मायाजाल का पर्दा फाश करने की कोशिश की है और इसके विरूध्द राजनीति का शिकार बना व्यक्ति को प्रस्तुत किया है।

'रिजक' कहानी का **'आसाराम'** स्वप्निल दुनिया में रहनेवाला व्यक्ति है। आसाराम क्रांतिकारी रास्ता अपना चुका है, लेकिन वह छद्मी राजनीति का शिकार बन चुका है। आसाराम के गिरफ्तार होने के बाद उसे छुडाने के लिए बिरादरी/गैर बिरादरी का कोई व्यक्ति आगे नहीं आता तब लल्लन सारा रोष पति पर ही निकालती है और कहती है, ''बिंडा रह हवालात में बडा मरता था बिरादरी के लिए। सगे खास अब कहाँ आलेप हो गए? हत्यारे सब अपने स्वारथ के हैं।''[20] अत: आसाराम एक सभ्य, सुसंस्कृत, व्यक्ति होने के कारण उसे राजनीति में लिया जाता है और उसकी कीमत उसे हवालात में जाकर देनी पडती है। इस प्रकार वह एक अच्छा इन्सान के रूप में दृष्टिगोचर होता है। अच्छे इन्सान राजनीति में असफल होते है, इसकी गवाही आसाराम देता है।''

'सेंध' कहानी में **'गंगासिंह'** एक बुढ़ा, चकबन्दी में फंसा हुआ इनसान है। गंगासिंह ने बौहरी से बात करते वक्त राजनीति का पर्दा फाश किया है, जैसा कि - ''अपनी अकल मत लगाया करो कला। हम जो कहते है, करती जाओ अब देखो तुम्हारे पास रहने के लिए गाँव में घर तक नहीं है - भाषण में जोर से कह सकती हो यह बात ठडा पड़ा मलबा है तुम्हारी जगह कमरा तो जनहित के लिए है।''[21] इस प्रकार बातों-ही-बातों में वह बौहरी ने किए हुए राजनीतिक के दाँव-पेच बताता है। अपने आँखों के सामने जमीन चकबन्दी में जाने पर और राजनीति के धूर्त, पांगुल लोगों के बिच फसने पर भी गंगासिंह सबकुछ चुपचाप सह लेते हैं। अत: वह संयमी, विवश, मजदूर के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

नारी का शोषण पुरूष किस प्रकार करता है और उसकी दुर्बलता का फायदा कैसे उठाया जाए यही आदमी चाहता है इस बात को मैत्रेयी पुष्पा ने निम्नलिखित कहानी में

उठाया है। **'अब फूल नहीं खिलते.....'** कहानी के **'प्रिंसिपल'** अपने आप पर संयम न रखनेवाले एक कॉलेज के प्रमुख हैं। छुट्टियाँ खत्म होने के पूर्व झरना को चार दिन पहले एक्स्ट्रा क्लास की पर्ची भेजकर उसपर जबरदस्ती करने का प्रयत्न करते है, जैसे -

''सर। सर ?''

''आप.....सर ?''

अविश्वास, चकित कर देनेवाली अबूझ-मारक स्थिति। वाणी जड हो गयी। हलक भीतकर तक सूखता जा रहा था।

बलिष्ठ हाथ कंधे से नीचे की ओर सरकने लगे,

''झरना..... नाराज हो हमसे।''

काष्ठ सरीका संज्ञाहीन शरीर।

''.....'' [22] इस प्रकार स्त्री को भोग की वस्तु समझनेवाले व्यक्ति के रूप में प्रिन्सिपल दृष्टिगोचर होते हैं।

'केतकी' कहानी का **'गंधर्वसिंह'** अपने दोस्त श्रीगोपाल की बहू (केतकी) पर जबरदस्ती करता है और गाँव में रिश्वतखोरी करता है। केतकी कहती है, ''सारे गाँव की जनता का तुमने मुँह बन्द कर रखा है। पैसे के जोर पर तानाशाही चला रहे हो। इनके नाम पर सरकारी ऋण इन तक पहुँचने ही कहाँ देते हो ! सरकारी अफसरों को रिश्वत देकर सब तुम लोग ही हडप लेते हो, उसी धन पर ब्याज पर ब्याज लगाकर इन्हे बडी मिन्नतों के बाद देते हो।''[23] अत: गन्धर्वसिंह गाँव में गुनाह कर खुले आम सभ्यता का ढोंग किए घुमता है। वह एक बुध्दिचातुर्य से युक्त रिश्वतखोर के रूप में अंकित है।

संसार में सभी भ्रष्टाचारी नहीं होते, तो कुछ अन्याय अत्याचार का विरोध करनेवाले भी होते हैं। उन पात्रों को मैत्रेयी पुष्पा ने बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। **'हवा बदल चुकी है'** कहानी में **'सुजान ठाकुर'** स्वभाव से शांत, सज्जन, सुसंस्कृत, बुढ़ा व्यक्ति है।

मत-पेटियाँ बदलकर चुनाव में सम्य सुजान को हराया जाता है तब चुप बैठे सुजान का संयम श्रेष्ठ स्तर का लगता है। दूसरे चुनाव में गाँव के लोग उन्हें बताते है कि, ''क्या करे सुजान..... कब तक चलेगा यह जबरदस्ती का राज..... खोखला प्रजातंत्र और इस तरह लालच और बन्दूक की नली के जोर पर बटोरा गया जन-मत सुजान ने तुरन्त अर्जी लिखी और चुनाव अधिकारी के पास चलने को तैयार हो गये।''[24] इस प्रकार सुजान अन्याय-अत्याचार का विरोध करते है और एक सज्जन व्यक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ सुजान के माध्यम से गांव जीवन में स्थित चुनावी षड्यंत्री राजनीति के दर्शन करा दिये गये है।

'आक्षेप' कहानी में **'मि विशालनाथ'** स्वभाव से शांत है। विवेकशील होने के कारण वह शहर से गाँव का विकास करने के लिए आया है। रमिया को वह अच्छी औरत होने पर भी लागों के कहने पर संदेह भरी नजरों से देखते हैं और उसके जाने पर पाबंदी लगाकर कहते हैं, ''खबरदार, जो अब कहीं गयी। सुनती ही नहीं तुम। अब एक पल भी नहीं ठहरूँगा तुम्हारे घर।''[25] इस प्रकार विशालनाथ रमिया की उपेक्षा कर उसकी प्रताड़ना करते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने यहाँ पर पुरूषों की नारी की तरफ देखने की दृष्टि को अंकित किया है। दूसरी तरफ स्त्रियों पर होनेवाले अन्याय का विरोध में खड़े रहनेवाले पुरूष के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

'केतकी' कहानी का **'श्रीगोपाल'** एक सज्जन, निस्वार्थी, स्वभाव से शांत, स्वाभिमानी, संयमी, भावुक व्यक्ति है। अपने दोस्त (गन्धर्वसिंह) ने बहू पर जबरदस्ती की है और बहू (केतकी) ने उस अतयाचार का विरोध किया। इस पर श्रीगोपाल अपने बहू पर गर्व मेहसूस करते हैं। अत: अपनी सारी जायदाद केतकी के नाम कर अपने छोटे बेटे (मणि) की जिम्मेदारी उसपर सौंप देते हैं। श्रीगोपाल का उदार व्यक्तिमत्व यहाँ अंकित है।

'कृतज्ञ' कहानी का **'हरिश'** स्वभाव से शांत है। अपने पिताजी की मृत्यु के दौरान अपने बल पर वह नौकरी करता है और किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता इतना वह स्वाभिमानी है। अनुपम के साथ पिछले रिश्तों को याद करके मदद करता है इतना वह सुसंस्कृत, अच्छा लडका है। वह एक शांत, मेहनती, लडके के रूप में अंकित होता है।

मेत्रेयी पुष्पा ने स्वार्थ और खोखले रिश्तों पर व्यंग्य किया है। 'भँवर' कहानी का 'केशव' स्वभाव से शांत है। वह बिवी से प्यार का दिखावा करनेवाला स्वार्थी व्यक्ति है। एक स्कूटरवाला विरमा से टकराने पर वह अपंग होती है। स्कूटरवाला पैसे देकर मामला खत्म करना चाहता है। उसके लिए केशव तैयार होता है, जैसा -''स्कूटर वाले ने एक लिफाफा केशव को पकडाया केशव ने कुछ गिना। स्कूटर वाले ने एक कागज दिया - केशव ने उस पर लिखा कागज जेब में रखकर स्कूटर वाला चला गया। केशव भी उसी के साथ निकल गया।''[26] इस प्रकार केशव पैसों के सामने बिवी को कींमत नहीं देता उसे अकेला छोड़कर चला जाता है। इतना वह स्वार्थी, प्यार का नाटक करनेवाला अंकित होता है। साथ ही खोखले रिश्तों का मुखवटा लेकर घुमने वाले भी यहाँ दिखाई देते हैं।

'कृतज्ञ' कहानी का **'अनुपम'** स्वार्थी है। वह अपने बिवी से बहुत प्यार करता है हरिशचंद के पडोसी में जब तक अनुपम रहता है तब तक उनके वह मुहबोले बेटे के रूप में उनसे संबंध बनाए रहात है लेकिन दिल्ली में तबादला होने के उपरांत उनसे जोडे संबंध बीमारी के वक्त तोडना चाहता है। चाचाजी से वह संबंध नहीं रखता और अपने बिवी को भी वहाँ जाने को रोकता है। ऐसा खोखले रिश्तों का दिखावा करनेवाला अनुपम अंकित है।

खून के रिश्तों में भी खोखलापन दिखायी देता है। **'छाँह'** कहानी के **'ददुआ'** एक बुढ़े इनसान के रूप में सामने आते हैं। ददुआ स्वभाव से शांत और स्नेहशील व्यक्ति है। बेटों के होते हुए भी बुढ़ापे में वह अपनी रोटी खूद बनाते हैं। और अपने पोते वेदु की

परवरिश की चिंता में परेशान दिखाई देते हैं।इस प्रकार वह जिद्दी, संवेदनशील व्यक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

'सिस्टर' कहानी में **'सुरेशचन्द'** एक बीमार रइस के रूप में सामने आते हैं। मनोभावी सिस्टर की सेवा देखकर सुरेशचन्द अपने स्वार्थ के लिए अकेली डिसूजा को बहन का स्थान देते हैं और कभी न खत्म होनेवाले बीमारी से तंदूरूस्थ होते हैं लेकिन बेटे (वीरेश) के शादी में आरती उतारने के रस्म पर डिसूजा को न बुलाकर सावित्री को बुलाते हैं, जैसे - ''सुरेश भइया ने सावित्री के सि पर प्यार-भरी चपत लगाई,''पगली ! ले,ये सौ रूपये रखाइतने ही हैं हमारे पास। शैतान ! बडी ढ़गिनी बहन है तू। '' कहकर सावित्री का सिर उन्होंने सीने से लगा लिया।''[27] अत: डिसूजा के साथ यहाँ खोखला रिश्ता दिखायी देता है। इस प्रकार सुरेशचन्द एक स्वार्थी,खोखले रिश्तों का दिखावटी करनेवाले रूप में अंकित है।

मनुष्य के जीवन में प्रेम इतना अहम स्थान ग्रहण कर चुका है कि प्यार के लिए व्यक्ति कुछ भी करने को तैयार होता है। यही मैत्रेयी पुष्पा ने दिखाने का प्रयास किया है। 'सहचर' कहानी में 'बंसी' स्वभाव से शांत, अपनी बिवी से बहुत प्यार करनेवाला के रूप में उजागर होता है। पत्नी (छबीली) को गेंगरीन के कारण पैर कटवाने के बाद दद्दा लखन का दूसरा विवाह करवाना चाहते हैं।लेकिन लखन शादी के मंडप से भागकर चला जाता है, जैस- ''बंसी भइया की ढूँढ मची थी।

घराती-बराती सब अवसन्न और लुटे-लुटे-से। बंसी कहाँ गया ? कहाँ गायब हो गया ? दद्दा का बोल फूटा और धिधियाते हुए बोले,''भइया, किसी भी तरह खोजो। कहाँ मर गया ससुर।''[28] अत: बंसी वापस अपने छबीली के पास जाकर अपने पति-पत्नी के रिश्ते को निभाता है। वह भावुक,सज्जन, दृढप्रेमी, खेत में काम करनेवाला इनसान के रूप में उजागर होता है।

'मन नाँहि दस-बीस' कहानी में **'स्वराज'** विवेकबुध्दि, पढाई में मेहनती, स्वभाव से शांत, भावुक है। चन्दना से प्यार करते हुए भी वह जातीयता, गरीबी के कारण विवश दिखाई देता है, जैसे - ''मैं क्यों नहीं लड सका समाज से ? तुम्हारी साथ पग मिलाकर क्यों नहीं चल सका, चन्दना ? दलित ही रह गया। चार अक्षर पढ़ने से मन के हीन - संस्कार नहीं बदले। दया के पात्र में शिक्षा का दान भरता रहा। क्या था मेरे पास ? दबे-घुटे संस्कार ! प्रताडित व्यक्तित्व।''[29] अत: चाहकर भी प्यार के प्रति कुछ न करनेवाला व्यक्तित्व स्वराज का दिखाई देता है।

'सफर के बीच' कहानी का **'गिरराज'** स्वभाव से शांत, परिश्रमी है। हेमन्ती से प्यार होने पर भी कुछ नहीं कर पाता। आई.ए.एस. अफसर बनने पर घर की सारी जिम्मेदारी अपने सर लेता है। बडा भाई और गाँव के अन्य लोगों के कारण रिश्वत करने पर भाग पडा गिरराज अपनी भूल का एहसास होते ही, रिश्वत को ठुकराता है। अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचने नहीं देता। अत: वह संयमी, परिश्रमी, स्वाभिमानी, रूप में अंकित है।

अपने बेटों पर प्यार होने पर भी हालात के सामने मजबूर पिता को मैत्रेयी पुष्पा ने बडी अच्छे रूप में अंकित किया है। **'तुम किसकी हो बिन्नी ?'** कहानी में बिन्नी के **' पापा '** अपने प्यार से बिन्नी को वंचित रखनेवाले पिता है, जैसे - ''अकेले एकान्त में कितनी बातें कहते हैं पापा, बिन्नी के लिए हम लाएँगें फ्रॉक!'' डॉल लाएँगे। फिर लाते क्यों नहीं ? मम्मी के डर से ? पर पापा क्यों डरते हैं ?''[30] इस प्रकार परीस्थिति वश कुछ बिन्नी के लिए कुछ न करनेवाले पापा दिखाई देते हैं।अत:वह एक संवेदनशील,शांत,प्यार कनेवाले आदमी के रूप में उजागर होते हैं।

'बोझ' कहानी में अक्षय के **' पापा '** नौकरी करनेवाले, युवक स्नेहिल व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं। वह अक्षय को चाहते हैं और उसे कहते हैं, ''अरे राजा बेटा क्यों नहीं ? तू तो बहुत अच्छा बेटा है।'' पापा ने जल्दी-जल्दी तौलिया से उसका भीगा शरीर पोंछ

डाला।''[३] अपने बेटे पर जान से जादा प्यार करनेवाला व्यक्ति दिखाई देता है। साथ ही अपने बच्चे का अच्छे क्रैश में भेजकर उसकी फीस के लिए बहुत मेहनत करते हैं और रुपया कम पडने पर अपने-आप को विवश समझते हैं। अत: अक्षय के पिता मेहनती, विवश, नौकरी करनेवाले युवक के रूप में अंकित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में एक छोटे लडके का भी वर्णन किया है। 'छाँह' कहानी में वेदू एक बहुत छोटा और सुंदर लडका है। माँ के मरनोपरांत भारी दमे के रोगी पिता के पास परवरिश न होने के उपरान्त नन्हा वेदू अपने दादाजी के साथ रहता है। नन्हा वेदू भूख लगने पर रोनेवाला एक विवश बालक के रूप में अंकित है।

मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्य दो कहानी संग्रहो में चित्रित कई पुरूष पात्र संयमी, बुध्दिजीवी, सभ्य और संयमी नजर आते हैं। कई पुरूष पात्र जिद्दी पुरूषी अहं से पीडित और नारी के प्रति भोगवाली दृष्टिकोन को रखनेवाले हैं। ये पुरूष पात्र परिस्थिति और परिवेश के अनुकूल हरकतें करते हैं। ग्रामीण पुरूष पात्र ग्रामीण राजनीति से ग्रस्त एवं षड्यंत्री लगते हैं। ' फैसला ' कहानी का रनवीर इसका इच्छा उदाहरण हो सकता है। इन कहानियों में चित्रित पुरूष पात्र आत्मकेंद्रित और संकुचित दायरे में भी चले हुए लगते हैं। कई पुरूष पात्र उदार मतवादी, संयमी स्वभाव के लगते हैं।

स्पष्ट है कि मैत्रेयी पुष्पा ने अच्छे पुरूषों की अच्छाइयों को और बुरे पुरूषों की बुराइयों को नीरक्षीर विवेक बुध्दि के साथ अंकित किया है। नारी होने पर भी उन्होंने पुरूष पात्रों पर क्रोध व्यक्त नहीं किया है।

२.३.३ मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में गौण नारी-पुरूष पात्र

हरदेई - 'फैसला' कहानी में पिता के अत्याचारों से पीडित हरदेई पति के साथ जाने के लिए चाहकर भी न भेजने के कारण आत्महत्या करती है।

ईसुरिया - **'फैसला'** कहानी में निश्चल इसुरिया अन्याय-अत्याचारों का विरोध करनेवाली एक संघर्ष करनेवाली युवती है। वह बकरियों का झुंड हाँकती है, इसुरिया एक सामान्य गडरिया की बहू होकर भी साहसी, न्यायप्रिय और चेतित नारी है। वह बसुमति के रूपमें नारी सजा आने पर आनंद व्यक्त करती है।उसे अचित न्याय देने के बारे में उचित सलाह देती है।

भाभी - **'सिस्टर'** कहानी में सुरेशचन्द की बिवी को भाभी नाम से संबोधित किया है और वह प्रेमळ,मेहनती,निस्वार्थी,युवती के रूप में कहानी में प्रस्तुत होते हैं।

ऋणी - **'सिस्टर'** कहानी में सुरेशचन्द का बेटा के रूप में वह सामने आता है और उसकी शादी हो रही है ऐसा चित्र अंकित है।

सावित्री - **'सिस्टर'** कहानी में ऋषि की बुआ है और ऋषी की शादी में आरती उतारने की रस्म पर सामने आती है।

सी.ओ.जी. - **'सेंध'** कहानी में चकबन्दी अफसर है और वह रिश्वत लेकर दूसरों की अच्छी जमिन पैसे देनेवाले को देने का काम करता है।वह सरकारी भ्रष्ट अफसर के रूप में आया है।

गुप्ता सर - **'अब फूल नहीं खिलते'** कहानी में गुप्ता सर कॉलेज मे पढानेवाले अध्यापक झरना उसे उसकी टैस्ट कापियाँ के पीछे खिंचे अश्लील चित्र रेखांकित करते समय संशयी नजरों से देती है। गुप्ता अध्यापक के नीति-मूल्यों की चौखट को तोडनेवाला लगता है।

श्रीष - **'अब फूल नहीं खिलते'** कहानी में झरना के क्लास में पढनेवाला और उसके गाँव का निवासी लडका है। वह झरना पर हुए अत्याचार के प्रति आवाज उठाने का साहस दिखाता है।

अम्मा - **'रिजक'**कहानी में अपनी अम्मा का अनुकरण लल्लन ने किया हुआ है। वह बुढी औरत के रूप में अंकित है।

बहादुर - **' बोझ '** कहानी में बहादुर एक लडका है और वह नौकर का काम करता है। वह स्वाभिमानी और अक्षय से बहुत प्यार करनेवाले के रूप में अंकित होता है।

माधो ठाकुर - **'पगला गई है भागवती.....'** कहानी में भागो के बहनोई है। अपने बेटी का आंतरजातीय विवाह मंजूर न करनेवाला और बेटे का आंतरजातीय विवाह धुमधाम से करनेवाला स्वार्थी व्यक्ति के रूपमें उसे दिखाया है।

जिज्जी - **'पगला गई है भागवती.....'** कहानी में भागो की बडी बहन है। वह ममतामयी, मेहनती, सुसंस्कृत, पुराने खयालों की के रूप में चित्रित है।

बेगम बेवा सन्नू खाँ- **'छाँह'** कहानी में चित्रित बेवा निस्वार्थी, सज्जन, प्रेमल नारी है और वह मुसलमान होकर वेदू को अपनी माँ जैसा प्यार करनेवाली, उसका खयाल रखनेवाली औरत के रूप में उजागर होती है।

अंजू,गुडिया- **'तुम किसकी हो बिन्नी'** कहानी में बिन्नी की दोनों बडी बहनें हैं। माँ से छुपकर वह दोनों बिन्नी से दुलार करती हे। साथ ही माँ को दूसरा बच्चा होने की खबर सुनकर दोनों बहनें माँ से बोलना बंद करती हैं और घर का सारा काम करना बंद करती हैं।

जोगेश - **'ललमनियाँ'** कहानी में जोगेश मौहरी का पति है। अमीर माँ-बाप का अकेला पुत्र है। मौहरी से शादी करने के बावजूद भी वह माँ-बाप के कहने पर दूसरी शादी करता है। वह स्वार्थी दिखाई देता है।

माँ - ' **बेटी** ' कहानी में मुन्नी की माँ एक स्वार्थी युवती है । वह बेटियों से जादा बेटों के महत्व देनेवाली नारी के रूप में उजागर होती है ।

लखन - **'सहचर'** कहानी में लखन स्वभाव से शांत, कॉलेज में पढनेवाला, होशियार लडके के रूप में अंकित है ।

दद्दा - ' **सहचर** ' महानी में दद्दा एक स्वार्थी, बुढे, मेहनती व्यक्ति है । वे छबीली को गेंगरीन होने के उपरान्त उसे मायके छोडने के बाद बंसी की दूसरी शादी करने का प्रयास करते हैं।

मास्टर - **'बहेलिये'**कहानी में सत्य के रखवाले और अन्याय-अत्याचार का विरोध करनेवाले मास्टर जी को भ्रष्टाचारी एक दावत में बुलाकर जहर देकर मारते
हैं ।

भोली - **'बहेलिये'** कहानी में भोली स्वभाव से शांत, सुंदर लडकी है । सुमेर उसपर जबरदस्ती करता है। भोली माँ बनने की संभावना देखकर डर के कारण आत्महत्या करती है ।

लाला - **'मन नाँहि दस-बीस'** कहानी में लाला स्वभाव से शांत है। वे गरीबी के कारण अपने बेटे का चन्दना पर प्यार होने के बावजूद भी स्वराज को शहर जाने के लिए कहनेवाले विवश पिता है ।

माँ - **'कृतज्ञ'** कहानी में चित्रित हरीश की माँ स्वभाव से शांत, स्वाभिमानी, बेबस, पति का बीमारी के कारण परेशान दिखायी देनेवाली नारी है ।

सुमन - **'भँवर'** कहानी में सुमन स्वार्थी है । विरमा को अपना बच्चा देकर उसे वह मातृत्व की जाल में फँसाती है और बच्चा जब सौतेली माँ और

अपनी माँ में कुछ फर्क नहीं करता उस वक्त वह बच्चों को अपनी तरफ खींचती है।

हेमन्ती - **'सफर के बीच'** कहानी की हेमन्ती स्वभाव से शांत, सुंदर लडकी है। वह गिरराज से प्यार करती है और उसी का नाम लेकर मर जाती है।

श्रीकांत - **'केतकी'** कहानी में का श्रीकांत बिवी (केतकी) से प्यार करनेवाला, विवेकबध्दि, गुरूकूल में पढ़नेवाला युवक है। केतकी पर हुए अत्याचार को सुनकर वह उसका त्याग कर सदा के लिए चला जाता है।

मणि - **'केतकी'** कहानी में चित्रित मणि छोटा बच्चा है। वह गुंगा होने के बावजूद भी अपनी भाभी पर हुए अत्याचार के विरोध में आवाज उठाता हे।

विद्या - **'चिन्हार'** कहानी में अंकित विद्या स्वभाव से शांत, ममतामयी, निस्वार्थी है। कनक को उसने अपनी बेटी माना है और उससे वह बहुत प्यार करती है।

समन्वित निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी कहानी लेखिका रही है जिन्होंने कहानी के पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया है। लगभग उन्होंने आलोच्य कहानियों के सभी पात्रों की मानसिक स्थिति का अंकन किया है। इसी कारण इन पात्रों की चारित्रगत विशेषताएँ हमारे सामने आ जाती हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने जिन गौण पात्रों का चयन किया है, उन्होंने मुख्य पात्रों के चरित्रों को विश्लेषित करने में सहायता ही दी है। उनके चरित्र की विशेषताओं को उभारने में वे सहाय्यक रहे हैं। सभी कहानियों में पात्रों की संख्या कम-अधिक मात्रा में दिखाई देती है। पात्रों का अंकन परिस्थिति के स्वभाव के, परिवेश के अनुकूल हुआ है। जहाँ अशिक्षित पात्र है वहाँ ग्रामीण भाषा का और जहाँ

सुशिक्षित पात्र है वहाँ अंग्रेजी भाषा का प्रयोग उचित मात्रा में हुआ है। पात्रों के चरित्रांकन में कहीं भी अति को दिखाया नहीं गया है बल्कि संयम बरता गया है । इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा अपनी कहानियों में न सिर्फ पात्रों के यथार्थ चरित्रांकन में सफल हुई है, बल्कि उनकी मानसिकताओं को खोलने में भी वे समर्थ दिखाई देती है।

मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्य दो कहानी संग्रहों के नर-नारी पात्र परिवेश की उपज लगते हैं। उनका व्यक्तित्व परिस्थितिनुरूप गठित होता हुआ दिखाई देता है। ये पात्र विविध अंचलों से, गाँवों से, आये हुए है। ग्रामीण पात्र ऊपर से भोले-भाले परंतु अंतरिकता से चतुर लगते हैं। कहानियों पात्रों की संख्या सीमित होकर भी पात्र अपने स्वभाव वैशिष्टयों के अनुरूप अपना अपना योगदान निभाते हैं। पात्र सभी स्तरों से आये हुए हैं। शैक्षिक स्तरों पर कार्य करनेवाले पात्र अनीति के पक्षधर लगते हैं। 'अब फूल नहीं खिलते' के प्रिन्सिपल और अध्यापक गुप्ता सर इसके सबूत लगते हैं। शिक्षा क्षेत्र में फैली अनीति के संकेत इन पात्रों के माध्यम से कहानीकार मैत्रेयी ने दिए हैं।

इन कहानी संग्रहों में जमींदारी से संबंधित पात्र परंपरानुकूल अन्यायी और अत्याचारी दिखाये हैं वे दुर्बलों का, उनकी स्त्रियों का शोषण करते हुए दिखाये हैं।

इन कहानियों के कई पात्र शहरों से ग्रामांचलों की ओर मुड़ते हुए दिखाई देते हैं। गांव की सेवा करना उन्हें आवश्यक लगता हैं। गाँव जीवन की समस्याओं को देखते हैं और अपनी शक्ति के अनुसार इस पर हल ढूँढने का प्रयत्न करते हैं। 'आक्षेप' कहानी का मि. विशालनाथ इसका उदाहरण है।

स्पष्ट है कि मैत्रेयी के पात्र अत्यंत सफलता के साथ उनकी कहानियों में अवतरित हुए हैं और अपनी-अपनी स्वतंत्र विचारधारा के साथ अपने व्यक्तित्व का दर्शन पाठकों को करा देते हैं। पात्र और चरित्र चित्रण की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा सफलता प्राप्त हुई है।

संदर्भ ग्रंथ - सूची

1. समीक्षा (जनवरी - मार्च 1997) - रमेश तैलंग - पृ. 25
2. Writing for Young People - Robionson M.L. पृ. 11
3. काव्य के रूप - डॉ. गुलाबराय - पृ. 221
4. हिंदी कहानी की रचना-प्रक्रिया - डॉ.परमानन्द श्रीवास्तव - पृ. 181
5. हिंदी कहानी कला - डॉ. प्रतापनारायण टंडन - पृ. 330
6. हिंदी कहानी में द्वन्व्द - डॉ. (श्रीमती) सुमन मेहरोत्रा - पृ. 16
7. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 43
8. वही - 131
9. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 45
10. वही - पृ. 26
11. वही - पृ. 80
12. वही - पृ. 65
13. वही - पृ. 64
14. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 59
15. वही - पृ. 104
16. वही - पृ. 139
17. वही -पृ. 141
18. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 11
19. वही -पृ. 19
20. वही -पृ. 65
21. वही -पृ. 45

22. वही -पृ. 61
23. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 132
24. वही -पृ. 72
25. वही -पृ. 79
26. वही -पृ. 109
27. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 33
28. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 34
29. वही -पृ. 59
30. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 131
31. वही -पृ. 81